

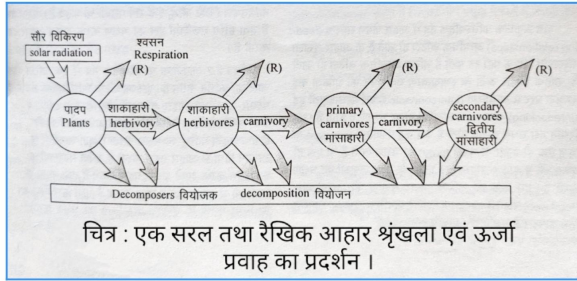
## " आहार श्रृंखला (Food Chain) एवं आहार जाल (Food Web) "

**Geography (Hons), Tdc Part-3,  
Paper-vii (Group-1)  
Environmental Geography, Unit-ii,**

**By  
Vidyanand Kumar  
Head Department of Geography  
Narayan College, Goreakothi, Siwan**

आहार श्रृंखला (food chain) वास्तव में निम्न पोषण स्तर से उच्च पोषण स्तरों में ऊर्जा (आहार ऊर्जा-रासायनिक ऊर्जा) के स्थानान्तरण तथा गमन का एक श्रृंखलाबद्ध क्रम होती है। आहार श्रृंखला सरल भी होती है परन्तु अधिकतर आहार श्रृंखलायें जटिल होती हैं।

निम्न उदाहरण द्वारा एक सरल एवं रैखिक आहार श्रृंखला का स्पष्टीकरण किया जा सकता है -



(1) हरे पौधे (प्राथमिक उत्पादक स्वपोषित पौधे) → शाकभक्षी चरने वाले जन्तु (प्राथमिक उपभोक्ता) → मांशाहारी जन्तु (द्वितीयक उपभोक्ता या प्राथमिक मांशभक्षी) → मांशभक्षी/सर्वभक्षी या सर्वाहारी (द्वितीयक मांशभक्षी)।

(2) घास (प्राथमिक उत्पादक) खायी जाती है → भेड़ द्वारा (शाकभक्षी, प्राथमिक उपभोक्ता) → भेड़ का भक्षण किया जाता है भेड़िया द्वारा (मांशभक्षी द्वितीयक उपभोक्ता, प्राथमिक मांशभक्षी)।

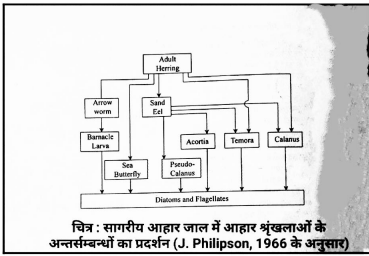
(3) घास → कीट → मेढक → सांप → बाज → तेंदुआ।

**आहार जाल (food web) :**

जब प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्र में आहार पोषण सम्बन्ध (feeding relationships) अत्यधिक जटिल हो जाते हैं तो आहार श्रृंखला सरल एवं रैखिक नहीं रह पाती है बल्कि अत्यधिक जटिल हो जाती है क्योंकि आहार ऊर्जा के स्थानान्तरण एवं गमन की प्रक्रिया कई अत्यन्त परस्पर सम्बन्धित (interconnected) एवं परस्पर गुथी हुई (interlocking) आहार श्रृंखलाओं से होकर सम्पादित होती है। यह स्थिति उस समय सम्भव होती है जब कई प्रजातियों (species) के जन्तु एक ही प्रकार के भक्ष्यों (prey) का भक्षण करते हैं या एक ही प्रकार की प्रजाति के

सदस्य कई प्रकार के भक्ष्य जन्तुओं का भक्षण करते हैं। इस तरह की जटिल आहार शृंखला को आहार जाल (food web) कहते हैं। उदाहरण के लिए प्राथमिक उत्पादक सागरीय पौधे डायटम से मछलियों (प्राथमिक उपभोक्ता) में आहार ऊर्जा के स्थानान्तरण एवं गमन के कई मार्ग हो सकते हैं।

इसे निम्न उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है -



(i) डायटम (हरी शैवाल, पोषण स्तर एक का प्राथमिक उत्पादक पौधा) के ऊपर अपने आहार के लिए वैरिकल लारवा निर्भर करता है, इस लारवा का तीर कृमि (arrow worms) सेवन करते हैं तथा हेरिंग मछलियाँ आहार के लिए इन तीर कृमियों का भक्षण करती हैं।

(ii) सागरीय डायटम का सेवन करके सागरीय तितलियाँ अपना जीवन-निर्वाह करती हैं तथा हेरिंग मछलियाँ इन सागरीय तितलियों का भक्षण करके अपना आहार ग्रहण करती हैं।

(iii) सागरीय डायटम से कैलनस, अकोशिया तथा टोमोरा (सागरीय छोटे जीव) अपना आहार ग्रहण करते हैं; इन छोटे जीवों का रेत ईल (छोटे कीड़े, इन्हें सर्प मछली भी कहते हैं) भक्षण करते हैं तथा हेरिंग मछलियाँ ईल का भक्षण करके अपना आहार ग्रहण करती हैं।